SYLLABUS

Class – B.A. (HONS.) MASS COMMUNICATION

I Year (Paper 02)

Subject – हिन्दी

इकाई–1	प्रयोजनमूलक हिन्दी का अभिप्राय एवं विशेषताएँ, प्रयोजनमूलक हिन्दी के विभिन्न रूप।
इकाई–2	हिन्दी और उसकी पारिभाषिक शब्दावली।
इकाई–3	प्रशासनिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, कला और सूचना प्रौद्योगिकी में प्रयोजनमूलक हिन्दी
इकाई–4	हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, कालखंड, प्रमुख पुस्तकें और लेखक, प्रमुख सम्मान–पुरस्कार।
इकाई–5	हिन्दी के विकास में योगदान देने वाली प्रमुख संस्थाएँ। साहित्य एवं जनमाध्यमों की भाषा।

renaissance
renaissance
renaissance

इकाई – 1
पारिभाषिक शब्दावली

प्रयोजनमूलक हिन्दी के संदर्र्भ में 'प्रयोजन' शब्द के साथ 'मूलक' उपसर्ग लगने से प्रयोजनमूलक पद बना है। प्रयोजन से तात्पर्य है उद्देश्य अथवा प्रयुक्ति। 'मूलक' से तात्पर्य है आधारित। अत: प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य हुआ कसी व शष्ट उद्देश्य के अनुसार प्रयुक्त भाषा। इस तरह प्रयोजनमूलक हिन्दी से तात्पर्य हिन्दी का वह प्रयुक्तिपरक व शष्ट रूप या शैली है जो वषयगत तथा संदर्भगत प्रयोजन के लए व शष्ट भा षक संरचना द्वारा प्रयुक्त की जाती है। वकास के प्रारम्भिक चरण में भाषा सामाजिक सम्पर्क का कार्य करती है। भाषा के इस रूप को संपर्क भाषा कहते हैं। संपर्क भाषा बहते नीर के समान है। प्रौढा की अवस्था में भाषा के वैचारिक संदर्भ परिपुष्ट होते हैं और भावात्मक अ भव्यक्ति कलात्मक हो जाती है। भाषा के इन रूपों को दो नामों से अ भहित कया जाता है। प्रयोजनमूलक और आनन्दमूलक। आनन्द वधायक भाषा साहित्यिक भाषा है। साहित्येतर मानक भाषा को ही प्रयोजनमूलक भाषा कहते हैं, जो वशेष भाषा समुदाय के समस्त जीवन-संदर्भो को निश्चित शब्दों और वाक्य संरचना के द्वारा अ भव्यक्त करने में सक्षम हो। भा षक उपादेयता एवं व शष्टिता का प्रतिपादन प्रयोजनमूलक भाषा से होता है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप :

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। इसके बोलने व समझने वालों की संख्या के अनुसार वश्व में यह तीसरे क्रम की भाषा है। यानी क हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। अत: स्वाभा वक ही है क वश्व की चुनिंदा भाषाओं में से एक महत्वपूर्ण भाषा और भारत की अ भज्ञात राष्ट्रभाषा होने के कारण, देश के प्रशासनिक कार्यो में हिन्दी का व्यापक प्रयोग हो, राष्ट्रीयता की दृष्टि से ये आसार उपकारक ही है।

राजभाषा के अतिरिक्त अन्य नये-नये व्यवहार क्षेत्रों में हिन्दी का प्रचार तथा प्रसार होता है, जैसे रेलवे प्लेटफार्म , मंदिर, धा र्मक संस्थानों आदि में। जीवन के कई प्रतिष्ठित क्षेत्रों में भी अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग कया जाता है। वज्ञान

और तकनीकी शक्षा , कानून और न्यायालय , उच्चस्तरीय वा णज्य और व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग होता है। व्यापारियों और व्यावसायियो के लए भी हिन्दी का प्रयोग सु वधाजनक और आवश्यक बन गया है। भारतीय व्यापारी आज हिन्दी की उपेक्षा नहीं कर सकते, उनके कर्मचारी, ग्राहक सभी हिन्दी बोलते हैं। व्यवहार के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग प्रयोजनों से हिन्दी का प्रयोग कया जाता है। बैंक मे हिन्दी के प्रयोग का प्रयोजन अलग है तो सरकारी कार्यालयो में हिन्दी के प्रयोग का प्रयोजन अलग है। हिन्दी के इस स्वरूप को ही प्रयोजनमूलक हिन्दी कहते हैं।

इस प्रकार व भन्न प्रयोजनों के लए गठित समाज खंडों द्वारा कसी भाषा के ये व भन्न रूप या परिवर्तन ही उस भाषा के प्रयोजनमूलक रूप हैं। अंग्रेजी शासन में यूरोपीय संपर्क से हमारा सामाजिक , आ र्थक और प्रशासनिक ढांचा काफी बदला , धीरे-धीरे हमारे जीवन में नई उद्भावनाएं (जैसे पत्रकारिता, इंजीनियरिंग) पनपी और तदनुकूल हिन्दी के नए प्रयोजनमूलक भा षक रूप भी उभरे। स्वतंत्रता के बाद तो हिन्दी भाषा का प्रयोग क्षेत्र बहुत बढ़ा है और तदनुरूप उसके प्रयोजनमूलक रूप भी बढे हैं और बढ़ते जा रहे हैं। साहित्यिक वधाओं, संगीत, कपड़ा-बाजार, स ाबाजारों, च कत्सा, व्यवसाय, खेतों, ख लहानों, व भन्न शल्पों और कलाओं , कला व खेलों के अखाड़ों , कोर्टो कचहरियों आदि में प्रयुक्त हिन्दी पूर्णत: एक नहीं है। रूप-रचना , वाक्य रचना, मुहावरों आदि की दृष्टि से उनमें कभी थोड़ा कभी अ धक अंतर स्पष्ट है और ये सभी हिन्दी के प्रयोजनमूलक परिवर्त या उपरूप है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी की वशेषताएं :

प्रयोजनमूलक भाषा की प्रमुख वशेषताएं इस प्रकार हैं –

1. वैज्ञानिकता :

प्रयोजनमूलक शब्द पारिभा षक होते हैं। कसी वस्तु के कार्य-कारण संबंध के आधार पर उनका नामकरण होता है, जो शब्द से ही प्रतिध्वनित होता है। ये शब्द वैज्ञानिक तत्वों की भांति सार्वभौ मक होते हैं। हिन्दी की पारिभा षक शब्दावली इस दृष्टि से महत्वपूर्ण

हैं।

2. अनुप्रयुक्तता :
उपसर्गों, प्रत्ययों और सामा सक शब्दों की बहुलता के कारण हिन्दी की प्रयोजनमूलक शब्दावली स्वत: अर्थ स्पष्ट करने में समर्थ है। इस लए हिन्दी की शब्दावली का अनुप्रयोग सहज है।

3. वाच्यार्थ प्रधानता :
हिन्दी के पर्याय शब्दों की संख्या अ धक है। अत: ज्ञान- वज्ञान के व वध क्षेत्रों में उसके अर्थ को स्पष्ट करने वाले भन्न पर्याय चुनकर नए शब्दों का निर्माण संभव है। इससे वा चक शब्द ठीक वही अर्थ प्रस्तुत कर देता है। अत: हिन्दी का वाच्यार्थ भ्रांति नहीं उत्पन्न करता।

4. सरलता और स्पष्टता :
हिन्दी की प्रयोजनमूलक शब्दावली सरल और एकार्थक है , जो प्रयोजनमूलक भाषा का मुख्य गुण है। प्रयोजनमूलक भाषा में अनेकार्थकता दोष है। हिन्दी शब्दावली इस दोष से मुक्त है।

इस तरह प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिन्दी एक समर्र्थ भाषा है। स्वतंत्रता के पश्चात प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में स्वीकृत होने के बाद हिन्दी में न केवल तकनीकी शब्दावली का वकास हुआ है , वरन व भन्न भाषाओं के शब्दों को अपनी प्रकृति के अनुरुप ढाल लया है। आज प्रयोजनमूलक क्षेत्र में नवीनतम उपलब्धि इंटरनेट तक की शब्दावली हिन्दी में उलब्ध है, और निरंतर नए प्रयोग हो रह हैं।

डॉ सत्यनारायण का वर्गीकरण मोटूरी .:
द क्षण भारत के हिंदी वद्वान डॉ : मोटूरी सत्यनारायण ने प्रयोजनमूलक हिंदी के छ . भेद मने है –
सामान्य सम्प्रेषण माध्यम

सामाजिक
व्यावसायिक
कार्यालयी
तकनीकी
सामान्य साहित्य

डॉ: ब्रजेश्वर वर्मा का वर्गीकरण .

डॉब्रजेश्वर वर्मा ने प्रयोजनमूलक हिंदी के मुख्य दो भेद कए हैं .

कोर हिंदी (Core Hindi)

एडवांस हिंदी (Advance Hindi)

कोर हिंदी के चार उपभेद है –

कार्यालयी हिंदी कार्यालय प्रशासन के लए प्रयुक्त
(Official Hindi for Office administration)
व्यावसायिक हिंदी वा णज्य गति व धयों के लए
(Commercial Hindi for Commercial Administration)
तकनीकी तथा बि ध व्यवसाय में प्रयुक्त
(Technical Hindi for Technical Variations including Legal profession)

renaissance
renaissance
renaissance

इकाई – 2
पारिभाषिक शब्दावली

विभिन्न ध्वनियों के मेल से बने सार्थक वर्ण–समुदाय को शब्द कहते हैं। भाषा में प्रायः सार्थक शब्दों का ही प्रयोग किया जाता है।

शब्दों का वर्गीरकण

स्त्रोत, रचना, अर्थ और प्रयोग के आधार पर शब्दों का कई प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है। स्रोत के आधार पर तत्सम्, तदभव, देशज तथा विदेशी शब्दों की गणना की जाती है। रचना के आधार पर शब्दों के दो भेद–मूल और यौगिक किए जाते हैं। इसी प्रकार से अर्थ के आधार पर शब्द के एकार्थी और अनेकार्थी दो भेद किए जाते हैं इसी प्रकार से प्रयोग विषय या प्रयोग क्षेत्र के आधार पर शब्द को तीन वर्गो में विभाजित किया जाता है। पारिभाषिक, अर्द्धपारिभाषिक तथा सामान्य शब्द।

पारिभाषिक शब्द

किसी वस्तु की अवधारणा या विचार का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कराने वाला नपा–तुला कथन परिभाषा कहलाता है। ऐसे कथन को अतिव्याप्ति, अव्याप्ति और असंगति जैसे दोषों से मुक्त होना चाहिए। साथ ही संक्षिप्त तथा सुस्पाष्ट भी होना चाहिए। परिभाषिक शब्द का सामान्य या आम शब्द से अंतर स्पष्ट करने और इसकी व्याख्या के लिए भी परिभाषा देना आवश्यक है। परिभाषिक शब्द को सामान्य परिभाषा इस प्रकार हो सकती है– ''मानव संबंधी किसी विशेष क्रिया–कलाप या प्रकृति की विशेष घटना अथवा किसी क्रिया–विचार या संकल्पना से संबंद्ध वह शब्द या शब्दावली, जिसका विषय विशेष के अर्ध्यता या विद्वान के लिए खास महत्त्व होता है।''

किसी ग्रंथ के अध्ययन और लेखन में हमारे सामने कई प्रकार के शब्द आते हैं। जब हम किसी ग्रंथ का एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते हैं तो अनेक शब्द ऐसे होते हैं, जिनके बदले हम दूसरी भाशा के एक अधिक पर्यायों में से इच्छानुसार किसी एक को चुनकर प्रयोग कर सकते हैं। ये विशेष प्रकृति वाले शब्द होते हैं। कभी–कभी हो सकता है कि जिस भाषा में अनुवाद किया जा रहा है, उसमें ऐसे शब्दों के उपयुक्त पर्याय का ही प्रयोग किया जा सकता है, जिसका विशिष्ट और सुविचाारित अभिप्राय होता है। ऐसे ही विशिष्ट शब्दों को पारिभाषिक शब्द कहा जाता है।

पारिभाषिक शब्दों की विशेषताएँ

पारिभाषिक शब्द को तकनीकी शब्द भी कहते हैं। तकनीकी शब्द अँगेजी के टेक्निकल शब्द का हिंदी रूपांतर है। यद्यपि टेक्निकल शब्द का संबंध यों तो टेक्निकल और टेक्नालॉजी से है, किन्तु तकनीकी शब्द का प्रयोग पारिभाषिक शब्द के अर्थ में भी होता है, जिसके अंतर्गत प्रशासन, मानविकी, विज्ञान तथा वाणिज्य आदि के शब्दों की अपनी विशेषताएँ होती हैं, जो उन्हें अन्य प्रकार के शब्दों से अलग करती हैं–

1ण पारिभाषिक शब्द का अर्थ स्पष्ट और सुनिश्चित होता है तथा एक विषय या सिद्धांत में उसका एक ही अर्थ होता है।
2ण एक विषय में एक धारणा या वस्तु के लिए एक ही पारिभाषिक शब्द होता है।
3ण पारिभाषिक शब्द मूल या रूढ़ होना चाहिए ताकि किसी प्रकार के संदेह है।
4ण पारिभाषिक शब्द छोटा होना चाहिए ताकि प्रयोग में सुविधा हो।
5ण पारिभाषिक शब्द ऐसा हो,जिससे उसके अर्थ संबंद्ध छायाओं को प्रकट करने वाले शब्द बनाए जा सके।

पारिभषिक शब्दों के प्रकार

प्रयोग की दृष्टि से पारिभाषिक शब्दों को दो वर्गो ममें बाँटा जा सकता है– अपूर्ण परिभाषिक तथा पूर्ण पारिभाषिक।

अपूर्ण पारिभाषिक– ये वे शब्द होते हैं जो विषय विशेष से संबंद्ध प्रोक्ति में विशेष अर्थ देते है। अतः पारिभाषिक स्वरूप का निर्वह करते हैं, लेकिन जब उस विशेष विषय क्षेत्र से बाहर उनका प्रयोग होता है, तो उनके पारिभाषिक शब्दों को अपूर्ण पारिभाषिक, अर्द्ध पारिभाषिक अथवा आंशिक परिभाषिक शब्द कहा जाता है, जैसे असंगति, शक्ति, अक्षर, रेखा, ध्वनि आदि।

पूर्ण पारिभाषिक– पूर्ण पारिभाषिक वे शब्द है, जिनका पारिभाषिक शब्द के रूप में ही प्रयोग होता है। ऐसे शब्दों का प्रयोग सामान्य या आम अंर्थ के लिए नहीं होता है। अपने विशिष्ट अर्थ के कारण ही ऐसे शब्द पूर्ण पारिभाषिक शब्द कहलाते हैः जैसे अद्वैत, दशमलय, प्रकटी, यवनिकी आदि।

प्रशासनिक पारिभाषिक शब्दावली

Adhoc	:	तदर्थ	Article	:	अनुच्छेद
Assembly	:	सभा	Allowances	:	भत्ता
Administrator	:	प्रशासक	Autonomy	:	स्वायवता
Act	:	अधिनियम	Acting	:	कार्यकारी
Bill	:	विधेयक	Constitution	:	संविधान
Discipline	:	अनुशासन	Election	:	चुनाव
Ex-officia	:	पदेन	Emergency	:	आपात्
Endorse	:	अंकन्–पृष्ठांकन	Inquiry	:	जाँच
Invalid	:	अमान्य	Registrar	:	कुलसचिव
Dean	:	अधिष्ठाता	Vice&chancellor	:	कुलपति

मानविकी परिभाषिक शब्दावलीः

Aesthetics	:	सौन्दर्यशास्त्र	Anthropologist	:	मानवविज्ञानी
Behaviorism	:	व्यवहारवाद	Content	:	विषयवस्तु
Citizenship	:	नागरिकता	Concept	:	धारणा
Creation	:	सर्जन			
Cultural Heritage	:	प्राकृतिक विरासत			
Environment	:	पारवेश	Emotion	:	संवेग
Frustration	:	कुंठा	Human	:	मानव
Indology	:	प्राव्यविद्या	Litcracy	:	साक्षरता
Population	:	जनसंख्या	Personification	:	मानवीकरण
Right	:	अधिकार	Reservation	:	आरक्षण
Sensitivity	:	संवेदनशीलता			

वाणिज्य संबंधी शब्दावली

Accountant	:	लेखापाल	Audit	:	गणनापरीक्षा
Agent	:	अभिकर्ता	Capital	:	पूँजी
Cashier	:	रोकड़िया	Currency	:	ऋणदाजा
Debtor	:	ऋणी	Income	:	आय

renaissance

Investment	:	निवेश	Leadger	:	खाता
Manager	:	प्रबंधक	Guarantee	:	प्रत्याभूति
Net Loss	:	शुद्ध घाटा	Production	:	उत्पादन
Profit	:	लाभ	Recurring	:	आवर्ती जमा
Pledge	:	गिरवी	Tax	:	कर
Tender	:	निविदा	Trade	:	व्यापार

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली:

Acidity	:	अम्लता	Anesthesia	:	संवेदनाहरण
Pollution	:	प्रदूषण	Antibiotic	:	प्रतिजैविक
Bio-Energy	:	जैव ऊर्जा			
Bio-Technology	:	जैव तकनीकी	Cell	:	कोशिका
Tissue	:	ऊतक	Satellite	:	उपग्रह
Radiation	:	विकिरण	Parasite	:	परजीवी
Microwave	:	सूक्ष्मतरंग	Gravitation	:	गुरूत्वाकर्षण
Genetics	:	अनुवांशिकी	Diagnosis	:	रोगनिदान
Ecology	:	परिस्थितिकी	Fossil	:	जीवाश्म
Fertility	:	प्रजननक्षमता, उर्वरता	Parasite	:	परजीवी

पारिभाषिक शब्दावली : अँग्रजी से हिंदी:

Honorarium	:	मानदेय
Bureaucracy	:	नौकरशाही
Act	:	अधिनियम
Advocate General	:	महाधिवक्ता
Domicile	:	अधिवास
Broadcasting	:	प्रसारण
Constitution	:	संविधान
Executive	:	कार्यपालिका
Evidence	:	साक्ष्य
Gazette	:	सूचना–पत्र
Memorandum	:	ज्ञापन
Majority	:	बहुमत
Suspend	:	निलम्बन
Tribe	:	जनजाति
Will	:	वसीयत
Honesty	:	ईमानदारी

renaissance renaissance renaissance

इकाई–4
हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

कालक्रम से उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर हिन्दी साहित्य का श्रीगणेश ईसा की दसवीं शताब्दी से हुआ मिलता है। इसमें यदि हिन्दी भाषा के प्रारम्भिक रूप अपभ्रंश को भी जोड लें तो यह काल छटी सातवीं शताब्दी तक जा पहुँचता है। इतना पुरातन और निरन्तर विकासशील रहने वाला भी हिन्दी साहित्य गत डेढ सहस्र वर्षो में समय के साथ बढता ही गया। दूसरी और यह बात भी ऐदम सच है कि प्रारम्भ के लगभग एक हजार वशों तक हिन्दी में साहित्य का इतिहास जैसी चीज का एक दम अभाव रहा है।

1. **प्रारम्भिक प्रयास –** हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन को प्रारम्भ करने का श्रेय है – प्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान प्रोफेसर गार्साद तांसी को जिन्होंने सन् 1939 ई. में इस्तावर दललतरेत्थुर ऐंदुई ए हिन्दुस्तानी की रचना की। इसकों सर्वप्रथम प्रकाशित किया था – ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैड़ की ओरियंटल ट्रांसलेशन कमेटी ने। फ्रेंच भाशा में रचित इसके प्रथम संस्करण के दो भाग थे और द्वितीय के तीन भाग। सन् 1938 में दिल्ली के मौलवों करीमुद्दीन ने इसकों तवफानुमशुअस के नाम से परिवर्तित परिवर्धित करके, प्रकाशित कराया। उर्दू में इसे तजाकिरा (जिक्र) कहा गया तो अंग्रेजी में हिस्ट्री।
   फिर भी इस प्रथम प्रयास को मार्ग प्रदर्शक अवश्यक माना जायेगा।

2. **श्रेष्ठ प्रयास –** जनवरी सन् 1029 में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रकाशित हुआ। वास्तव में हिन्दी में लिख ग्रन्थ को सच्चे और पूर्ण अर्थों में साहित्य का इतिहास कहा जा सकता है। वह यह ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में सबसे पहली बार आदिकाल से लेकर छायावादी रहस्यवादी युग तक कह विभिन्न स्त्रोंतों से प्राप्त सामग्री सुनियोजित एवं संविचारित काल विभाजन के आधार पर और साहित्यिक ढंग से उपस्थित की गई मिलती है। यह इतिहास साहित्य की परिभाषा के साथ आरम्भ होता है –जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चितवृत्ति का सचित्र प्रतिबिम्ब होता है तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन हेाता चला जाता है। आदि से अन्त तक इन्हीं चितवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहितय परम्परा के साथ उसका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है। इस परिभाषा से ही इस बात का संकेत मिल जाता है कि उनके इतिहास में काल क्रम के आधार पर कविवृत्त संग्रह वरन् तत्कालीन सामाजिक परिपार्श्व में कवियों के कवित्व पर और कृतित्व के साथ ही कवियों के कर्तत्व पर भी विचार किया गया है।

   निःसंदेह अपनी इन्ही विशेषताओं के कारण यह इतिहाय अधिकाधिक अर्थों में साहित्य का इतिहास प्रतीत होता है। प्रमाण अपनी दो प्रवृत्तियों के कारण साहित्य का उनका इतिहास अधिकाधिक अर्थों में साहित्य का इतिहास प्रतीत होता है। यह कहना भी अप्रासंगिक नही की कम से कम हिन्दी के लिए इस प्रकार का प्रयत्न अपने में यह ग्रन्थ आदर्श रूप में ग्रहण किया जाता है काल विभाजन की कसौटी पर विचार करते समय भी आचार्य भ्ाुक्ल ने दो तथ्यों पर विशेश बल दिया है।

1. जिस कालखण्ड के भीतर किसी विशेष ढंग की रचनाओं की प्रचुरता दिखाई पडे उसे एक अलग काल माना जा सकता है और उसका नामकरण उन्हीं रचनाओं के स्वरूप के अनुसार किया जा सकता है।
2. किसी काल के भीतर जिस एक ही ढंग के बहुत अधिक ग्रन्थ प्रसिद्ध चले आते है उस ढंग की रचना उस काल के लक्षण के अन्तर्गत मानी जायेगी अर्थात प्रसिद्धि भी किसी काल की लोकप्रवृत्ति की प्रतिध्वनि हुआ करती है। यही कारण कि यद्यपि आचार्य शुक्ल ने (डॉ. नामवरसिंह के शब्दों में कवियों के नाम से पहले क्रम संख्या देने का ढंग भी वही मिश्रबंधु विनोद वाला प्रचीन ढंग) रहने दिया, परन्तु प्रवुत्ति साम्य और युग के अनुसार कवियों को समुदायों मे रखकर उन्होने सामूहिक अंशों मे स्वतः ही युक्तिसंगत प्रतीत होने लगता है।

3. **अन्य प्रयास –** भाुक्लजी के पश्चात अधिका ातः उन्हीं के अनुकरण पर, हिन्दी साहित्य के अनेक इतिहास ग्रन्थ रचे गये। प्रमुख ग्रन्थ और ग्रन्थकार है –
   1. हिन्दी भाषा और साहित्य श्यामसुन्दर दास – संवत 1987 में इलाहबाद के प्रकाशित लगभग 500 पृष्ठों के ग्रन्थ में साहित्य की विशिष्ट धाराओं का विस्तृत निरूपण किया गया है।
   2. हिन्दी साहित्य का विवेचानात्मक इतिहास – डॉ. सूर्यकान्त शास्त्री प्रकाश वर्ष संवत 1987। प्रमुख विषेशता – कवियों का तुलनात्मक अध्ययन।
   3. हिन्दी भाषा और उसके साहित्य का विकास – हरिओम मूलतः पटना विश्वविद्यालय में दिया गया विस्तृत भाषण बाद में पुस्तककार में प्रकाशित।
   4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. रमाशंकर शुक्ल रसाल। संवत 1988 में प्रकाशित हिन्दी के सभी इतिहास ग्रन्थों में बडा।
   5. साहित्य की झाँकी – प्रो. सत्येन्द्र। संवत 1993 में प्रकाशित निबन्धात्मक शैली।
   6. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. राजकुमार वर्मा। पहले दो कालों तक सीमित।
   7. हिन्दी साहित्य – उद्भव और विकास, हिन्दी साहित्य की भूमिका तथा हिन्दी साहित्य का आदिकाल हजारी द्विवेदी।
   8. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त
   9. हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास – डॉ. देवी ारण रस्तोगी।
   10. हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास – (सं) डॉ. नगेन्द्र।

कालखण्ड –

आदिकाल – संवत 1050 से 1375 तक

भक्तिकाल – संवत 1375 से 1700 तक

रीतिकाल – संवत 1700 से 1900 तक

आधुनिक काल – संवत 1900 से अब तक

हिन्दी की प्रमुख पुस्तकें एवं लेखक –

1. बंकिम चन्द्र चटोपाध्याय – आनंदमठ
2. कौटिल्य – अर्थशास्त्र।
3. विभूति भूषण वर्मा – पाथेर पांचाली
4. जवाहरलाल नेहरू – डिस्कवरी ऑफ इंडिया

5. जयशंकर प्रसाद – कामायनी
6. मुंशी प्रेमचंद – गोदान, गबन, रंगभूमि
7. महादेवी वर्मा – यामा, निहारिका
8. भारतेन्दु हरिशचन्द्र – अंधेर नगरी
9. धर्मवीर भारती – गुनाहों का देवता
10. हरिवंशराय बच्चन – मधुशाला
11. फणीश्वरनाथ रेणु – मैला आंचल
12. श्रीलाल शुक्ल – राग दरबारी
13. भीष्म साहनी – तमस

हिन्दी के प्रमुख सम्मान – पुरस्कार –

1. भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार –

ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ न्यास द्वारा भारतीय साहित्य के लए दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार है। भारत का कोई भी नागरिक जो आठवीं अनुसूची में बताई गई २२ भाषाओं में से कसी भाषा में लखता हो इस पुरस्कार के योग्य है। पुरस्कार में ग्यारह लाख रुपये की धनरा श , प्रशस्तिपत्र और वाग्देवी की कांस्य प्रतिमा दी जाती है।

2. मूर्ति देवी सम्मान –

मूर्तिदेवी पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ स मति के द्वारा दिया जानेवाला प्रतिष्ठित साहित्य सम्मान है। पुरस्कार में दो लाख रूपए, प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चह्न और वाग्देवी की प्रतिमा दी जाती है।

3. साहित्य अकादमी सम्मान –

साहित्य अकादमी पुरस्कार , सन् १९५४ से प्रत्येक वर्ष भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ कृतियों को दिया जाता है, जिसमें एक ताम्रपत्र के साथ नक़द रा श दी जाती है। नक़द रा श इस समय एक लाख रुपए हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद पुरस्कार , बाल साहित्य पुरस्कार एवं युवा लेखन पुरस्कार भी प्रतिवर्ष व भन्न भारतीय भाषाओं में दिए जाते हैं, इन तीनों पुरस्कारों के अंतर्गत सम्मान रा श पचास हजार नियत है।

4. सरस्वती सम्मान –

सरस्वती सम्मान के. के. बिड़ला फ़ाउंडेशन द्वारा दिया जाने वाला साहित्य पुरस्कार है। यह सम्मान प्रतिवर्ष सं वधान की आठवीं अनुसूची में दर्ज भाषाओं की में प्रका शत उत्कृष्ट साहित्यिक कृति को दिया जाता है। यह कृति सम्मान वर्ष से पहले दस वर्ष की अव ध में प्रका शत होने वाली कोई पुस्तक ही हो सकती है। इस सम्मान में शाल , प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चह्न और पांच लाख रुपये की सम्मान रा श दी जाती है। सरस्वती सम्मान का आरंभ १९९१ में कया गया था।

5. शलाका सम्मान –

शलाका सम्मान हिंदी अकादमी को ओर से दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है। हिन्दी जगत में सशक्त हस्ताक्षर के रूप में वख्यात तथा हिन्दी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में सम र्पत भाव से काम करने वाले मनीषी वद्वानों, हिन्दी के वकास तथा संवर्धन में सतत संलग्न कलम के धनी, मानव मन के चतरों तथा मूर्धन्य साहित्यकारों के प्रति अपने आदर और सम्मान की भावना को व्यक्त करने के लए हिन्दी अकादमी प्रतिवर्ष एक श्रेष्ठतम साहित्यकार को शलाका सम्मान से सम्मानित करती है। सम्मान स्वरूप, १,११,१११/-रुपये की धनरा श, प्रशस्ति-पत्र एवं प्रतीक चह्न आदि प्रदान कये जाते हैं।

6. व्यास सम्मान –

व्यास सम्मान भारतीय साहित्य के लए दिया जाने वाला ज्ञानपीठ पुरस्कार के बाद दूसरा सबसे बड़ा साहित्य-सम्मान है। इस पुरस्कार को १९९१ में के के बिड़ला फाउंडेशन ने प्रारंभ कया था। इस पुरस्कार में ३ लाख रुपए नकद प्रदान कए जाते हैं। १० वर्षों के भीतर प्रका शत हिन्दी की कोई भी साहित्यिक कृति इस पुरस्कार की पात्र हो सकती है। अज्ञेय , कुंवर नारायण तथा केदार नाथ संह को भी इस पुरस्कार से अलंकृत कया जा चुका है।

7. गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार –

'गणेश शंकर वद्यार्थी पुरस्कार' पुरस्कार हिंदी पत्रकारिता और रचनात्मक साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य तथा व शष्ट योगदान करने वालों को मलता है। गणेश शंकर वद्यार्थी पुरस्कार को प्राप्त करने वाले वद्वानों को भारत के राष्ट्रपति द्वारा स्वयं यह सम्मान प्रदान कया जाता है। इस पुरस्कार को पाने वाले वद्वानों को पुरस्कार के अंतर्गत एक-एक लाख रुपये, एक शॉल और प्रशस्ति पत्र प्रदान कया जाता है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष दो लोगों को प्रदान कया जाता है। इस 'हिंदी सेवी सम्मान योजना' का प्रारम्भ 1989 में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के द्वारा कया गया था।

8. शरद जोशी सम्मान –

शरद जोशी सम्मान ,उत्कृष्ट सृजन को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित करने की अपनी सुप्रतिष्ठित परम्परा का अनुसरण करते हुए मध्यप्रदेश शासन ने हिन्दी व्यंग्य , ल लत निबन्ध, संस्मरण, रिपोर्ताज, डायरी, पत्र इत्यादि वधाओं में रचनात्मक लेखन के लए स्था पत कया है। यह गौरव की बात है क शरद जोशीमध्यप्रदेश के निवासी थे, जिन्हें उनकी सशक्त और वपुल व्यंग्य रचनाओं ने साहित्य के राष्ट्रीय परिदृश्य पर प्रतिष्ठित कया। शरद जोशी ने व्यंग्य को नया तेवर और वै वध्य दिया तथा समय की वसंगति और वडम्बना को अपनी प्रखर लेखनी से उजागर करते हुए समाज को दृष्टि और दिशा प्रदान करने का उत्तारदायी रचनाकर्म कया। उनकी व्यंग्य रचनाओं ने हिन्दी साहित्य की समृ द्ध में अपना सुनिश्चित योगदान दिया है।

9. मैथिलीशरण गुप्त –

मै थलीशरण गुप्त सम्मान मध्यप्रदेश शासन ने साहित्य और कलाओं को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से अनेक राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय सम्मानों की स्थापना की है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में वा र्षक सम्मान का नाम खड़ी बोली के शीर्ष प्रवर्तक क व श्री मै थलीशरण गुप्त की स्मृति में रखा गया है। राष्ट्रीय मै थलीशरण गुप्त सम्मान का उद्देश्य हिन्दी साहित्य में श्रेष्ठ उपलब्धि और सृजनात्मकता को सम्मानित करना है। सम्मान का निकष असाधारण उपलब्धि, रचनात्मकता, उत्कृष्टता और दीर्घ साहित्य साधना के निरपवाद सर्वोच्च मानदण्ड रखे गये हैं।

renaissance
renaissance
renaissance

इकाई–5

हिन्दी के विकास में योगदान देने वाली प्रमुख संस्थाएं

नागरी ल प परिषद्, नई दिल्ली
राजभाषा संघर्ष स मति, दिल्ली
राष्ट्रभाषा प्रचार स मति, वर्धा (महाराष्ट्र)
केन्द्रीय स चवालय हिन्दी परिषद्, नई दिल्ली
केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवन्तपुरम
म णपुर हिन्दी परिषद्, इम्फाल
अंग्रेजी अनिवार्यता वरोधी स मति, नकोदर (पंजाब)
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
राष्ट्रीय हिन्दी परिषद्, मेरठ
द क्षण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चैन्नई
अ खल भारतीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद (.प्र.उ)
साहित्य मंडल, नाथद्वारा(राजस्थान)
मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार स मति, भोपाल (.प्र.म)
कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा स मति, बेंगलूर (कर्नाटक)
मुंबई हिन्दी वद्यापीठ, मुंबई(महाराष्ट्र)
मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद्, बेगलौर
अ खल भारतीय भाषासम्मेलन-साहित्य-, पटना
राष्ट्रीय हिन्दीसेवी महासंघ, इन्दौर (.प्र.म)
भारतए शयाई साहित्य अकादमी-, दिल्ली
हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
अ खल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली
भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद्, मुम्बई (महाराष्ट्र)

renaissance